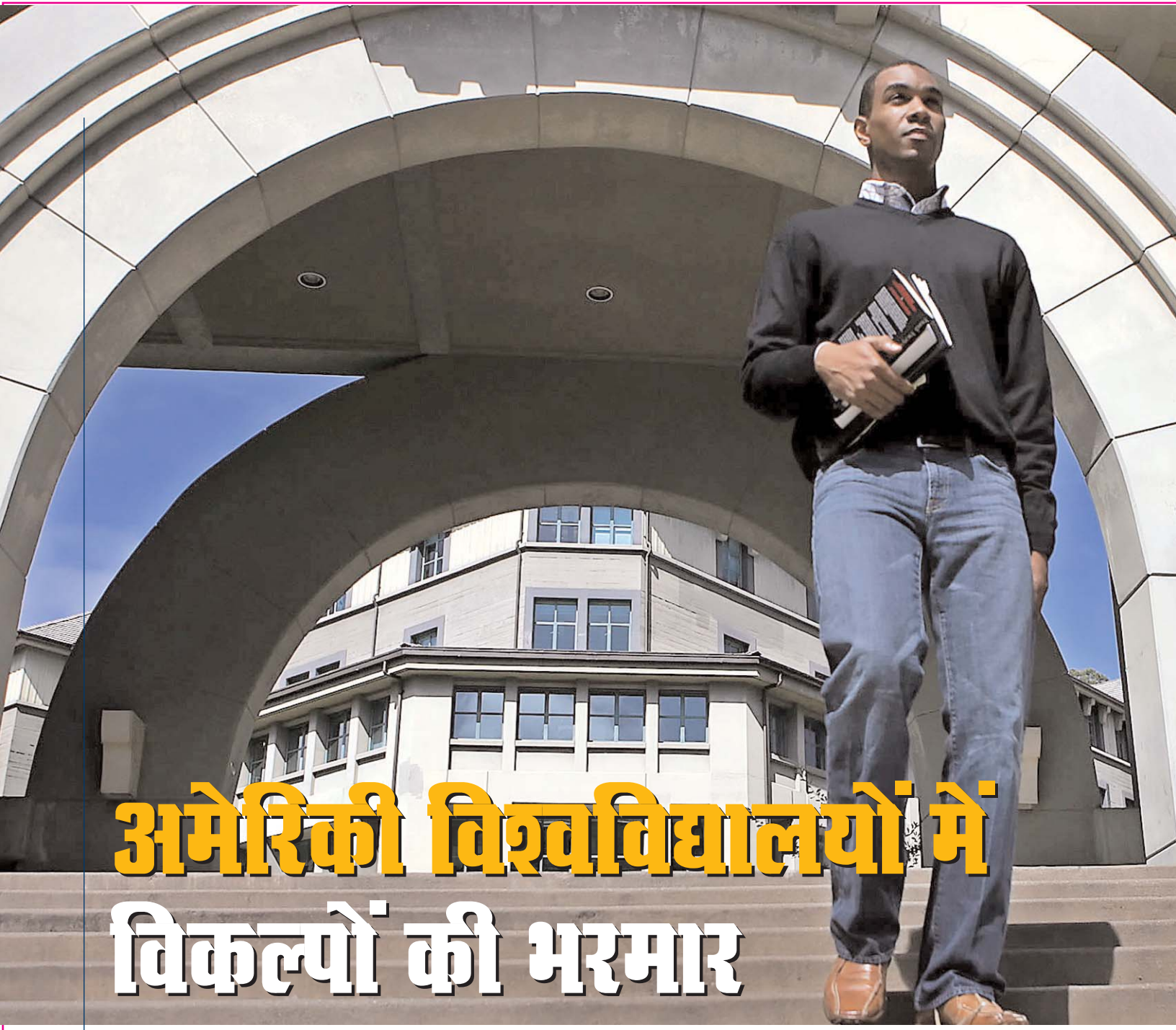

अमेरिकी विश्वविद्यालयों में विकल्पों की भरमार

मोनिका मर्सर

पहली बार मुंबई के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के परिसर में पहुंच कर मैं बहुत प्रभावित हुई। जनवरी में जब मैं वहां गई तो पाया कि बाकी भारतीय विश्वविद्यालयों के मुकाबले वहां हरियाली भी ज्यादा थी और साफ-सफाई भी। और बुद्धिमता तो जैसे वहां की फिजा में घुली हुई थी।

ऐसा तो नहीं कि इस संस्थान के बारे में सुनी चर्चाएं ही मेरी कल्पनाशीलता को जागृत कर रही थीं? आई.आई.टी. में पढ़े मेरे मित्र हमेशा ही मजाक-मजाक में (पर मुझे लगता है कि पूरी गंभीरता से) कहते थे कि यह संस्थान सर्वश्रेष्ठ छात्रों को चुनता है। मेरा मोटा-मोटा सा आकलन था कि यह संस्थान मूलत: अमेरिका के विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एम.आई.टी.) का भारतीय संस्करण ही है-एम.आई.टी. भी विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय है। उसका नाम रौब और ईर्ष्या जगाता है।

कुछ ही हफ्ते बाद मैं मैकेनिकल इंजीनियरिंग के 19 वर्षीय छात्र रोहन परांजपे से मिलने आई.आई.टी. मुंबई में उसके कमरे में पहुंची। वहां मैंने देखा कि कमरे में पहले रहे छात्रों द्वारा दीवारों पर बनाई आकृतियां थीं, अलमारी में गिनेचुने सौंदर्य प्रसाधन थे और आइपॉड पर ट्रेसी चैपमैन की आवाज गूंज रही थी। कमरे के सीमेंट के फर्श के खुरदरे किनारों को छोड़ दें तो यह किसी भी अमेरिकी विश्वविद्यालय परिसर में किसी भी छात्रावास का कमरा हो सकता है।

चुस्त, खूबसूरत रोहन का सपना है कारें डिजाइन करना। आई.आई.टी. में अपने दाखिले पर वह ज्यादा डींग नहीं हांकता। आई.आई.टी. में अपने दाखिले का श्रेय वह किस्मत और प्रवेश परीक्षा की खामियों को देता है। वह मुझसे अनुरोध करता है कि मैं भी कमरे की दीवारों पर अपनी यादगार अंकित कर दूं- दीवारों से चूना गिर रहा था और पुताई होना तय थी। तभी उसकी दोस्त 21 वर्षीय नीता नायर का फोन आता है जिसे अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में एम.बी.ए. में दाखिला न मिल पाने की खबर मिली है। नीता ने कई विश्वविद्यालयों में आवेदन किया है। उसे रोहन से सांत्वना चाहिए। मैंने मन ही मन सोचा कि दुनिया

एलिस अर्मांडोला © ए.पी.–डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

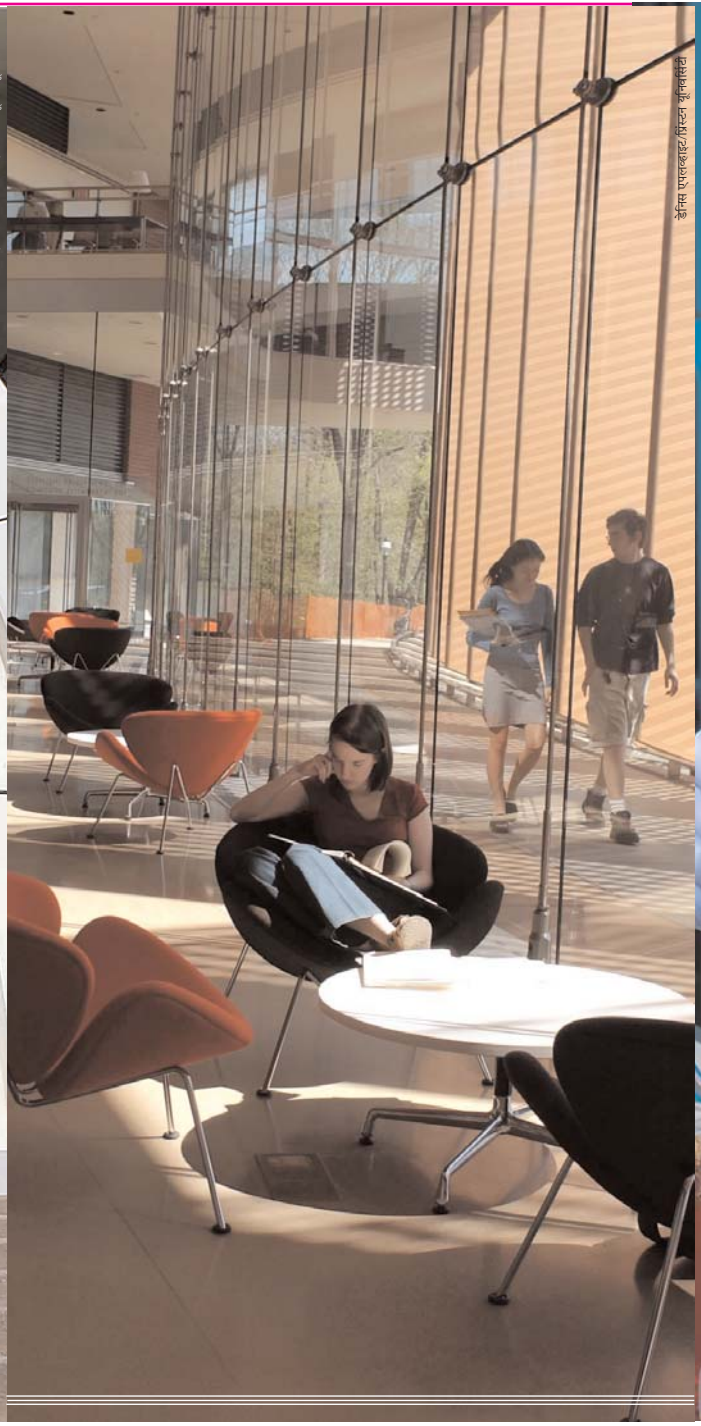

डेनिस एपलब्वाइट/प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी

एमी ग्रेव

बिल्कुल बाएं: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कले के हास स्कूल ऑफ बिजनेस में सीढ़ियों से उतरते जेम्स मार्शल। मध्य में: प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी की आइकैन प्रयोगशाला में विद्यार्थी। ऊपर: कोर्नेल विश्वविद्यालय की ग्रेजुएट विद्यार्थी तारन सिरवेंट प्रयोगशाला में काम करते हुए।

भर में एक बात तो पक्की है: आई.आई.टी. में प्रवेश पाने का इच्छुक भारतीय छात्र हो, अमेरिकी विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने का इच्छुक भारतीय छात्र हो या अपने स्थानीय जूनियर कॉलेज में प्रवेश पाने का इच्छुक कोई अमेरिकी छात्र– हैरानी, निराशा और अस्वीकार किया जाना उच्च शिक्षा से जुड़े अनिवार्य तत्व हैं।

लेकिन भारत में पले-बढ़े किसी भी व्यक्ति के लिए अमेरिकी उच्च शिक्षा आज भी अनूठा और अपरिभाषित अनुभव है। मैं अपने अनुभव को याद करती हूं। शिक्षा की मेरी यात्रा कभी सुनियोजित लगती लेकिन अक्सर उसमें हेरफेर करना पड़ता। अमेरिका में हर साल कॉलेज की पढ़ाई के लिए जितनी किस्म के नए विद्यार्थी होते हैं, उतने ही शिक्षा पाने के तरीके भी हैं। वे इस बात के लिए पसीना बहाते हैं कि उन्हें अपने पसंदीदा शीर्ष संस्थान में प्रवेश मिलेगा या नहीं, क्या पढ़ना है और पढ़ाई पर आने वाले खर्च का भुगतान कैसे करना है।

शुरुआत कॉलेज की फीस चुकाने की योजना से होती है और अगर आप वाकई रईस नहीं हैं तो इस पर बहुत सोच-विचार करना पड़ता है और कई मामलों में तो यह प्रक्रिया बहुत तनावभरी भी हो सकती है। अगर डल्लास, टेक्सास की सदर्न मेथॅडिस्ट यूनिवर्सिटी (एस.एम.यू.) के छात्रावास के अपने कमरे की दीवारों पर मैंने कुछ लिखा होता तो शायद मुझे 500 डॉलर जुर्माना चुकाना पड़ता या मेरे भारीभरकम डिपॉजिट में से इतनी रकम काट ली जाती। औसत अमेरिकी छात्र को ऐसी बहुत-सी वित्तीय चिंताओं पर सोच-विचार करना पड़ता है।

वर्ष 1997 में एस.एम.यू. में मेरी ट्यूशन फीस 18,000 डॉलर सालाना थी। अब वर्ष 2005-06 में

http://www.state.gov/r/summit/58708.htm

शिक्षा के मुद्दे पर अमेरिकी विश्वविद्यालयों के प्रमुखों की टिप्पणियां

यह 23,846 डॉलर सालाना है। विश्वविद्यालय का आकलन है कि अन्य शुल्क, परिसर में रहने की जगह और दिन में तीन बार भोजन की सुविधा का खर्च भी जोड़ लें तो एस.एम.यू. में चार साल के स्नातक पाठयक्रम की पढ़ाई करने के लिए आपको कम से कम 36,000 डॉलर सालाना चुकाने होंगे। एस.एम.यू. का दावा है कि यह सस्ता सौदा है। एक अन्य निजी विश्वविद्यालय (इन्हें सरकार से आर्थिक सहायता नहीं मिलती है) ड्यूक यूनिवर्सिटी की तो ट्यूशन फीस ही 32,600 डॉलर सालाना है। रहने-खाने का खर्च अलग।

1995 में हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद कॉलेजों में पढ़ाई के खर्चे मुझे बहुत भारी लगे,

रजत कुमार

एम बी ए 2006,
ह्वार्टन स्कूल, यूनिवर्सिटी
ऑफ पेंसिल्वानिया

मेरी छोटी-सी सलाह तो यह है कि अगर आपको खाना बनाना नहीं आता है तो अब सीख लीजिए। साथ ही लोगों के साथ घुलने-मिलने की कला सीखिए। छात्रों की आम शिकायत है कि ''बौद्धिक स्तर पर तो भारतीय बहुत अच्छे होते हैं लेकिन हम सबसे जरा कट कर रहते हैं।'' दीर्घकालीन योजना के रूप में इस बात पर विचार कीजिए कि पांच साल बाद आप क्या करना चाहेंगे। यहां आने वाले सीईओ अक्सर कहा करते हैं, ''आप लोग जरूर सफल होंगे। इसलिए जो मन करता है वह काम कीजिए।'' दो साल अपने व्यक्तित्व के विकास में लगाइए और ऐसा कोई काम मत पकड़ लीजिए जिसे करने का आपका तो कोई इरादा नहीं था मगर आपके पड़ोसी की उस पर खूब नजर थी।

इसलिए मैंने एक ही विश्वविद्यालय या कॉलेज में चार साल पढ़ने के बजाय कुछ कल्पनाशीलता से काम लिया। वैसे मुझे कोई लंबी-चौड़ी रकम का हिसाब नहीं लगाना था। मेरे पिता नेब्रास्का के रहने वाले हैं जहां उनके पास बड़े खेत हैं। हमारे यहां औद्योगिक इकाइयों में काम आने वाली मक्का और सॉयबीन की खेती होती है। हर साल गर्मी तक फसल बेच कर मिला पैसा बैंक में जमा करते रहने के बाद भी जमा हुई कुल रकम पांच बच्चों की कॉलेज की पढ़ाई के लिए पूरी नहीं थी। ऐसे में एस.एम.यू. की चार साल की फीस कहां से दी जाती?

यह साफ था कि मुझे कुछ सूझ-बूझ लगानी होगी। मैंने नेवादा, मिसौरी के महिलाओं के एक छोटे कालेज कॉटी कॉलेज में दाखिला लेने का फैसला किया जो सस्ता तो था ही, बढ़िया शैक्षणिक संस्थान भी माना जाता था। वहां की दो साल की पढ़ाई का खर्चा मेरे मातापिता उठा सकते थे। तीसरे साल में मैंने एस.एम.यू. में दाखिला ले लिया जहां 3.5 ग्रेड प्वाइंट के औसत वाले 'स्थानांतरित छात्रों' को ट्यूशन फीस में 50 प्रतिशत छूट दी जाती थी (आज भी दी जाती है)। फिर मैंने कम ब्याज पर सरकार से मिलने वाला कर्ज ले लिया। वर्ष 1999 में जब मैंने स्नातक की परीक्षा पास की तो मुझ पर 10,000 डॉलर से कुछ ज्यादा का कर्ज था जो राष्ट्रीय औसत से बहुत कम था।

मेरा निजी अनुभव अमेरिकी शिक्षा प्रणाली के लचीलेपन का जीताजागता प्रमाण है जहां बहुत से छात्र पहले स्थानीय स्तर के जूनियर कॉलेजों में पढ़ाई करते हैं और फिर स्थानांतरण करवा लेते हैं या फिर कम खर्चीली स्टेट यूनिवर्सिटी में जाते हैं। यह एक ऐसा व्यावहारिक विकल्प है जिसे अपनाकर विदेशी छात्र भी हजारों डॉलर की बचत कर सकते हैं क्योंकि अमेरिकी नागरिक न होने के कारण उन्हें सरकारी कर्ज नहीं मिल सकता।

हार्वर्ड, प्रिंस्टन और येल जैसे विश्वविद्यालयों की ट्यूशन फीस भी ड्यूक यूनिवर्सिटी जैसी ही है और यही कारण है कि ज्यादातर छात्र यहां दाखिला लेने की बात सोचते भी नहीं। लेकिन पैसे की चिंता के बाद मसला उठता है सही कॉलेज के चुनाव का। जरूरी नहीं कि वे नामी कॉलेज जिनमें दाखिला पाना टेढ़ी खीर है, बेहतर ही साबित हों। आज अमेरिकी शैक्षणिक परिदृश्य में कॉलेज-विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा का वैसा महत्व नहीं रह गया है जैसा पहले हुआ करता था। 27 साल के मैट डेनियल्स अमेरिकी हैं और अब मुंबई में नौकरी करते हैं। उन्होंने अमेरिका के सबसे बढ़िया पांच संस्थानों- हार्वर्ड, येल, एम.आई.टी., कोलंबिया और मिशिगन विश्वविद्यालय में दाखिले के लिए आवेदन किया था और सभी जगह उनका दाखिला हो भी गया। लेकिन उन्होंने हार्वर्ड से ग्रेजुएट की डिग्री ली। उनका अनुभव सुनिए, ''हार्वर्ड में कुछ जबर्दस्त परंपराएं हैं। वहां का नाट्य समारोह *हेस्टी पुडिंग थियेट्रिकल्स* और प्रकाशन कार्यक्रम *लेट्स गो पब्लिकेशन्स* ऐसे अनूठे कार्यक्रम हैं जो किसी और नामीगिरामी कॉलेज या विश्वविद्यालय में नहीं हैं। इन कार्यक्रमों ने मेरे कॉलेज जीवन को बहुत समृद्ध बनाया। और इन सब से बढ़कर बात वहां के प्रखर, महत्वाकांक्षी, बहुप्रतिभा संपन्न छात्रों से जुड़ना अपने-आप में खासी शिक्षा है। सच यह भी है कि एक दफा हार्वर्ड इस तरह के लोगों को आकर्षित करना बंद कर दे तो उसका खुद का आकर्षण बेहद कम हो जाएगा।''

तो फिर अमेरिकी शिक्षा में नाम का क्या महत्व है, बात चाहे हार्वर्ड की हो? जब हमने मैट से पूछा कि क्या उनका इरादा हमेशा से ही हार्वर्ड में पढ़ने का था तो उन्होंने बताया, ''नहीं, बस उस समय लगा कि यही बढ़िया रहेगा। मैंने सोचा कि रोबोटिक्स जैसे किसी विषय की पढ़ाई कर लूंगा। आज हार्वर्ड के बारे में जो जानकारी मेरे पास है (मैट कहते हैं कि हार्वर्ड एक खास दायरे में सीमित ऐसी जगह हैं जहां कुछ नया करने की चाहत दब जाती है और वहां के प्रोफेसर भी पढ़ाने और सलाह देने में तंगदिल हैं), वही तब होती तो शायद मेरा चुनाव कुछ और ही होता। हांलाकि आज मैं खुद को जितना जानता हूं, उसे देखते हुए आज भी हार्वर्ड को ही चुनूंगा। यही बात दूसरे शब्दों में कहूं: मेरे निजी विकास का श्रेय हार्वर्ड को जाता है हालांकि मेरे बौद्धिक विकास के मामले में संस्थान लापरवाह रहा।''

लब्बोलुआब यह है कि कॉलेज शिक्षा के मामले में अमेरिकी छात्रों के पास हजारों विकल्प हैं। उन पर नामीगिरामी संस्थानों में दाखिला लेने का भयानक दबाव नहीं होता। वे नामी संस्थानों में प्रवेश की होड़, दबाव और तनाव से इसलिए बचे रहते हैं क्योंकि कम प्रसिद्ध संस्थान भी आला दर्जे की शिक्षा उपलब्ध करवाते हैं। सच तो यह है कि पैसे की समस्या हल हो जाने के बाद अमेरिकी शिक्षा प्रणाली इतने विकल्प और चुनाव की ऐसी स्वतंत्रता उपलब्ध करवाती है जैसी संसार में कहीं और नहीं दिखती। अमेरिका के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों की अपनी खामियां और खूबियां हैं और जैसा कि मैट कहते हैं, ''शिक्षा के अपने अनुभव को आनंददायक बनाना खुद छात्र पर निर्भर है।'' 17 साल की उम्र में अटलांटा आए जॉर्जिया के 29 साल के नवीन जयसेकर कहते हैं,'' यहां की संस्कृति और स्वतंत्रता ने मुझे भौंचक्का कर दिया।'' वह रोम, जॉर्जिया स्थित शॉर्टर कॉलेज में बिताए दिनों को छोटे, प्रांतीय कॉलेज को चुनने के फायदे और नुकसानों को विस्तार से स्पष्ट करने वाला मानते हैं। शॉर्टर एक प्राइवेट कॉलेज है जिसमें ज्यादातर अमेरिकी छात्र ही पढ़ते हैं लेकिन वहां प्राध्यापक हर छात्र पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देते हैं। इस कॉलेज की ख्याति अमेरिका के दक्षिणी राज्यों की मशहूर मेहमाननवाजी की परंपरा के कारण भी है। नवीन के दक्षिण भारतीय माता-पिता के मन में कहीं न कहीं यह बात भी बैठी थी और फिर उन्हें यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एंजिलीस जैसे बड़े शहरों के संस्थानों में

सिम्ली दास

मेरे बोस्टन के अनुभव

वर्ष 2001 की शरद ऋतु में मैंने स्नातक छात्र के रूप में बोस्टन यूनिवर्सिटी के कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में प्रवेश लिया। बोस्टन को बहुत पहले से अमेरिका की शैक्षिक राजधानी माना जाता है। यहां हर साल 50 से भी अधिक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए 2,50,000 से भी अधिक छात्र आते हैं।

इस विश्वविद्यालय का चुनाव मैंने केवल महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित होने के कारण ही नहीं किया बल्कि इसमें मेरी पूरी ट्यूशन फीस माफ हो गई थी। साथ ही शिक्षण तथा अनुसंधान सहायक का काम भी मिल गया जिससे मेरे रहने-खाने का खर्च पूरा हो सकता था। अमेरिका में उच्च शिक्षा बहुत महंगी है और प्राय: भारत से आने वाले जिन छात्रों को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता या ऋण सुविधा न मिली हो, उनके लिए यहां पढ़ना कठिन हो जाता है। इसलिए सबसे पहले मेरा ध्यान इस बात की ओर गया कि अमेरिका में छात्रों को सहायता किन स्रोतों से मिल सकती है। यहां उपलब्ध अनुसंधान के अनेक सुअवसरों और पुस्तकालय की बहुत अच्छी सुविधाओं के बारे में जानकर मैं आश्चर्यचकित रह गई।

विश्वविद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों में शिक्षकों का पूरा दखल है। आपको जाने-माने प्रोफेसरों के सान्निध्य में पढ़ने का सुअवसर मिलता है जो अपनी विद्वता और शैक्षिक श्रेष्ठता के कारण कक्षा में मौलिक विचारों के साथ पढ़ाने के लिए आते हैं। वे महज निर्देश देने के बजाय आपको शोध कार्य में व्यक्तिगत रूप से जुट जाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अमेरिका में कई विषयों में ग्रेजुएट स्तर की पढ़ाई के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है और अंडरग्रेजुएट स्तर की तुलना में समय भी बहुत कम होता है। इसलिए ग्रेजुएट छात्र को बहुत सावधानी से समय का सदुपयोग करना पड़ता है।

वहां पाठ्यक्रम को महत्व जरूर दिया जाता है लेकिन अमेरिकी विश्वविद्यालयों की असली ताकत है अनुसंधान में उनका योगदान और इससे वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि। कुछ अपवादों को छोड़कर अमेरिका और भारत के विश्वविद्यालयों में मैंने यही मुख्य अंतर देखा। दूसरा अंतर यह देखा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में सैद्धांतिक ज्ञान और संख्यात्मक समस्याओं को अधिक महत्व दिया जाता है जबकि अमेरिकी शिक्षा प्रणाली में व्यावहारिक ज्ञान तथा हाथ के हुनर पर बल दिया जाता है। मुझे इस अंतर का उदाहरण भी देखने को मिल गया। मेरे एक मित्र ने भारत के एक श्रेष्ठ तकनीकी संस्थान से अंडरग्रेजुएट डिग्री हासिल की थी और वह किसी भी समस्या का समाधान तुरंत कर सकता था। लेकिन, प्रयोगशाला के व्यावहारिक काम में वह पीछे छूट गया। इसलिए हमें यह सब बड़ी मेहनत से सीखना पड़ा। यह हमारा सौभाग्य ही था कि हमारे साथियों ने हमारी मदद की और हमें प्रोत्साहित किया।

कैंपस में विभिन्न राष्ट्रों और संस्कृतियों के छात्र थे। अमेरिका जैसे देश में जहां ऐसी अंतर्राष्ट्रीय विरासत मौजूद है, वहां पढ़ने पर मानव विविधता के बारे में खुली दृष्टि विकसित होती है। अमेरिकी नागरिकों को अपने देश और संस्कृति पर गर्व है, साथ ही वे अपने देश में अध्ययन और रोजगार के लिए आने वाले विदेशियों का भी खुले दिल से स्वागत करते हैं। नए संभावित विदेशी छात्रों के लिए मेरी सलाह है: अध्ययन के अतिरिक्त कॉलेज की गतिविधियों में जमकर हिस्सा लीजिए, केवल अपने समुदाय के छात्रों के साथ बातचीत करने के बजाय विभिन्न देशों के छात्रों से संपर्क बढ़ाइए। ऐसा करने पर आप जितना सोच सकते हैं, उससे भी कहीं ज्यादा सीखने का आपको मौका मिलेगा। □

दीपाश्रीति काकाती

क्वांत डाउनटे बोस्टन यूनिवर्सिटी

चिंतस सुकुमी © ए.पी. - डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

रोंदूर ई. सेमा © ए.पी. - डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

बाएं से: ग्रेजुएट दिवस के मौके पर सिम्ली दास बोस्टन यूनिवर्सिटी में, बोस्टन यूनिवर्सिटी के प्रबंधन संस्थान के विद्यार्थी, बोस्टन विश्वविद्यालय की कॉरिन ज्यां (बाएं) बास्केट बॉल मैच के दौरान गेंद पर नियंत्रण खो बैठीं जबकि बोस्टन कॉलेज की अजा परहैम उन्हें निहार रही हैं, बोस्टन यूनिवर्सिटी के अग्गानिस एरीना में मैरून 5 बैंड के गिटारवादक जेम्स वेलेंटाइन अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए।

पृष्ठभूमि: रोंदूर ई. सेमा © ए.पी. - डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

लेखिका: *सिम्ली दास ने ग्रेजुएट होने के बाद बोस्टन में जॉनसन एंड जॉनसन में काम किया। वह वर्ष 2004 में भारत लौटीं और बेंगलूर में रहती हैं।*

ग्रेड का हौआ नहीं

माइक डेर © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

न्यू जर्सी के न्यू ब्रंसविक के डगलस कॉलेज परिसर में अध्ययनरत सोफोमर स्टेफनी ग्रोबर

डॉ. अनिंदो रॉय

पोस्ट डॉक्टरल रिसर्च एसोसिएट, मैकेनिकल इंजीनियरी विभाग, मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी

एक स्नातक स्तर के छात्र के रूप में मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि कोर्स कब पूरा होगा। प्रश्न यह नहीं है कि कोई छात्र स्नातक की पढ़ाई कब पूरी कर लेगा बल्कि यह है कि क्या वह ऐसा कर सकेगा। पढ़ाई में शोध का हिस्सा बहुत है। आशा यह की जाती है कि छात्र कम से कम मार्गदर्शन लेकर शोध कार्य करें और स्तरीय शोध लेख प्रकाशित कराएं। समय-समय पर मौलिक शोध की राह में आने वाले अडंगों से निराशा भी होती है। लेकिन शिक्षा की इस प्रणाली के अंतर्गत इसी तरह बेहतर शोध कार्य करना संभव होता है।

छात्रों (और अभिभावक भी) को रहने की व्यवस्था से लेकर शैक्षिक प्रणाली के विवरण तक हर चीज की जानकारी पाने के लिए परेशान नहीं होना चाहिए। इनमें से ज्यादातर मसलों की जानकारी यहां आ जाने के बाद मिल जाती है। लगभग हर यूनिवर्सिटी में वहां पढ़ने वाले प्रत्येक देश के छात्रों ने समितियां बनाई हुई हैं और वे नए छात्रों की हर संभव सहायता करती हैं। अगर किसी यूनिवर्सिटी के डिग्री कोर्स और आपके मनपसंद विषय में आपका दाखिला हो चुका है तो आप अपने परिवार से लंबे समय तक दूर रहेंगे। इसलिए, केवल हवाई योजनाएं बनाने के बजाय अपने समय को यादगार बनाइए।

छात्रों के 'भयानक किस्से' भी पता चलते रहते थे।

इसलिए नवीन ने चार साल शॉर्टर में पढ़ाई की जहां एक बार उनके कमरे का साथी बेसबॉल खिलाड़ी था जो हमेशा सभी अमेरिकियों वाली बेसबॉल टीम के अन्य खिलाड़ियों को कमरे में निमंत्रित करता रहता था। नवीन हंसते हुए कहते हैं, ''मैं टेनिस टीम में था और हमारी टीम के अन्य देशों में रहने वाले सदस्य हमेशा हमारे कमरे में आते रहते थे। एकदम वसुधैव कुटुंबकम का नजारा होता था।'' लेकिन उन्हें समझ में आया कि सांस्कृतिक रूप से कस्बाई रोम उस अमेरिका से बहुत अलग-थलग था जिसकी कल्पना उनके माता-पिता ने की थी। अमेरिका के परंपरावादी धुर दक्षिण के छोटे कस्बों के जीवन का अभ्यस्त होने में नवीन को समय लगा। वह कहते हैं, ''मैं यहां आने वाले

जब एक जाने-माने अमेरिकी विश्वविद्यालय में देविता आर. सराफ ने दाखिला लिया तो ऐसी बात नहीं कि उन्हें कुछ पता नहीं था। उन्होंने कैलिफोर्निया के रंग-ढंग पहचानने के लिए जानकारी तो जुटाई ही, बर्कले स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के एक ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम में भी हिस्सा लिया। वह कहती हैं, ''बर्कले में बिताए उन दो महीनों में मुझे पता लग गया कि अमेरिकी शिक्षा से मुझे क्या हासिल होगा और यह भी कि एक विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थी को किस तरह का वैश्विक दृष्टिकोण दे सकता है।''

अमेरिकी संस्कृति से पर्याप्त परिचय के बावजूद देविता को यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया की कक्षाओं में एक अलग-सा अनुभव हुआ। वहां वह अपनी स्नातक उपाधि के लिए अध्ययन कर रही थी। वहीं उसे पता लगा कि एक आम अमेरिकी छात्र ग्रेड के बारे में क्या सोचता है। पहला अनुभव यू.एस.सी. की पहली कक्षा में हुआ। यह बेसिक कोर्स वह दूसरी भारतीय छात्रा नमिता सी. श्रॉफ के साथ कर रही थी।

देविता कहती हैं, ''हमें पहली बार उस कक्षा में ग्रेड मिले और उसी से हमें दोनों देशों की शिक्षा प्रणाली का अंतर समझ में आ गया।'' वह बताती हैं, ''नमिता और मैंने तुरंत एक-दूसरे की ओर देखा, अपने-अपने ग्रेड पर चर्चा की और एक-दूसरे को अपनी कॉपियां दिखाईं ताकि यह पता लग सके कि कहां गलती हुई और यह भी कि हम कैसे उस विषय में और बेहतर कर सकते हैं। हमारे सहपाठी हमें आश्चर्य से देख रहे थे। और, हमने जब उनमें से किसी से उसके ग्रेड के बारे में पूछा तो उनकी ओर से कोई भी जवाब नहीं मिला।''

यह बात सच है कि अमेरिकी छात्र अपने ग्रेड की बात बस अपने-आप तक ही सीमित रखते हैं। देविता को इससे बहुत आश्चर्य हुआ बल्कि यों कहें कि उसे सांस्कृतिक आघात लगा जिससे उबरने में समय लगा। एस.एम.यू. में साहित्य और लेखन की कक्षाओं में भी यही दृश्य था: ग्रेड और पढ़ाई के सिलसिले में मिले कार्य के बारे में कुछ भी नहीं बताना लेकिन जब प्रोफेसर हमारी कॉपियां लौटाते तो हमारी डेस्क की ओर ताकना।

मुझे संदेह है कि ग्रेड के बारे में इस अमेरिकी सोच के कई कारण हैं। एक व्यावहारिक कारण कॉलेज स्तर की कक्षाओं को पढ़ाने का तरीका भी है। यू.एस.सी. कोर्स की पढ़ाई के दौरान देविता को पता लग गया कि अमेरिकी कॉलेजों के पाठ्यक्रमों को कई कार्यों तथा गतिविधियों में बांट दिया जाता है जिनमें टेस्ट और परीक्षाएं भी शामिल हैं। छात्र को इन सबमें अर्जित अंकों के आधार पर समग्र ग्रेड दी जाती है। यह भारतीय शिक्षा प्रणाली से बिल्कुल भिन्न है क्योंकि भारत में छात्र प्राय: एक ही परीक्षा में जितने प्रतिशत अंक प्राप्त करते हैं, उसी के आधार पर उसकी योग्यता आंकी जाती है।

देविता कहती हैं कि यही कारण है कि भारतीय छात्र अपने ग्रेड पर खुल कर चर्चा करते हैं। वह कहती हैं, ''इसे कहीं अधिक सकारात्मक तरीका माना जाता है क्योंकि इससे छात्र में प्रतिस्पर्धा की भावना अधिक पैदा होती है और उसे यह भी पता रहता है कि उसकी प्रतिस्पर्धा किससे है। इसका लक्ष्य शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करना है।''

अमेरिकी उच्च शिक्षा प्रणाली में निश्चित रूप से अच्छे ग्रेड दिए जाते हैं जिनसे अक्सर योग्यता के आधार पर दी जाने वाली छात्रवृत्तियों पर निर्णय लिए जाते हैं या स्नातक कार्यक्रम के लिए आपकी योग्यता आंकी जाती है। लेकिन, इस प्रणाली में मूलभूत अंतर यह है कि अमेरिकी छात्र एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा नहीं करते। इसीलिए ग्रेड पद्धति हर छात्र के लिए व्यक्तिगत मामला है।

असल में अमेरिका में छात्रों के लिए ग्रेड 'अत्यधिक गोपनीय' मसला है। इसीलिए देविता कहती हैं, ''अमेरिका में शिक्षा प्रणाली आपको केवल एक व्यक्ति से प्रतिस्पर्धा करना सिखाती है। और, वह व्यक्ति हैं- स्वयं आप।''

-मोनिका मर्सर

हेमंत भट्टनागर

ग्रेड प्रणाली

अमेरिका में सर्वाधिक प्रचलित ग्रेड प्रणाली है, ए से एफ या 0 से 4 के पैमाने वाली।

ए यानी 4
बी यानी 3
सी यानी 2
डी यानी 1
एफ यानी 0 (अनुत्तीर्ण) (कई बार इसे ई भी कहते हैं)

अन्य सामान्य ग्रेड हैं:

आई यानी अपूर्ण

डब्ल्यू यानी कोर्स से वापसी

डब्ल्यू यू यानी कोर्स से अनधिकृत वापसी

ऑडिट यानी कोर्स के दौरान कोई क्रेडिट या ग्रेड नहीं लेने हैं, सिर्फ कक्षाओं में आना है और दिया गया कार्य पूरा करना है।

उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण यानी उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण होने के हिसाब से कक्षा में आना, उत्तीर्ण होने पर कोई विशेष ग्रेड नहीं।

उत्तीर्ण- कोई क्रेडिट नहीं यानी कोर्स सिर्फ उत्तीर्ण होने के लिए करना. कोई नकारात्मक अंक नहीं।

हर प्रोफसर यह कायदा तय करता है कि वह किए गए काम का आकलन किस हिसाब से करेगा और कोर्स के लिए आखिरी रूप से ग्रेड देगा। प्रोफेसर अक्सर छात्रों को कक्षा में आने के पहले दिन ही ग्रेड के कायदे बता देते हैं। इसे कोर्स सिलेबस में शामिल कर दिया जाता है। अक्सर प्रोफेसर यह स्पष्ट करते हैं कि वे टेस्ट में ग्रेड किस तरह देते हैं या शोध पत्रों की ग्रेडिंग कैसे करते हैं। ऐसा बहुत ही कम होता है कि किसी की ग्रेड किसी एक पेपर या टेस्ट से तय हो। आमतौर पर बहुत-सी बातों का आकलन किया जाता है। इन चीजों में से कई को एकसाथ देखा जा सकता है।

- % कक्षा में उपस्थिति
- % क्विज या अंतरिम टेस्ट में भागीदारी
- % मध्यावधि परीक्षा
- % आखिरी परीक्षा
- % शोध पत्र

हर छात्र को यही राय दूंगा कि वह किसी संस्था या समूह से जुड़ जाएं, लेकिन छोटे शहर-कस्बों में यह कठिन होता है। जब मैं यहां आया तब रोम में कुल चार भारतीय परिवार थे। आप बस खुले दिल-दिमाग से आइए और सोचने-समझने के अपने सामान्य तरीकों को दरकिनार कर दीजिए।''

मुंबई की देविता आर. सराफ और निमिता सी. श्रॉफ का कहना है कि जुड़ना बहुत महत्वपूर्ण है और एक बार आप कैंपस में किसी समूह से जुड़ जाएं तो बाकी चीजें अपने आप होती चली जाती हैं। मैंने कॉट्टी कॉलेज में संगीत समूह में दो साल तक गायन में भागीदारी की और बाद में एस.एम.यू. में भी ऐसा किया हालांकि मेरे प्रमुख विषयों अंग्रेजी और रूसी का संगीत से कुछ भी लेनादेना नहीं था। 24 साल की देविता और 23 साल की निमिता ने यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया के मार्शल स्कूल ऑफ बिजनेस से स्नातक की उपाधि पाई और पढ़ाई के अलावा ढेरों अन्य गतिविधियों में भाग लिया। दोनों बताती हैं कि मार्शल के उलट एस.एम.यू. में विश्वविद्यालय परिसर में छात्र संगठनों और कक्षा के बाहर छात्रों से जुड़ने के अवसरों की भरमार थी।

निमिता कहती हैं,''कैंपस में सक्रिय छात्र समूहों का फायदा उठाना चाहिए और सर्वांगीण शिक्षा के अनुभव के लिए उनसे जुड़ना भी चाहिए।'' वह खुद एसोसिएशन ऑफ इंटिग्रेटेड मार्केटिंग से बहुत सक्रियता से जुड़ी थीं। उसने उसका लोगो तैयार करने और वेबसाइट स्थापित करने में पहल की। देविता ने वर्ष 2002 में ग्लोबस नामक उस छात्र संगठन की शुरुआत

सुमित जैन

स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क, बफैलो के ग्रेजुएट, बेस 77 नामक सॉफ्टवेयर कंपनी में इंटरनेशनल बिजनेस मैनेजर के पद पर कार्यरत

जिस यूनिवर्सिटी में प्रवेश ले रहे हों, वहां से प्रोफेसरों का विवरण प्राप्त किया जा सकता है (यदि उपलब्ध हो)। इससे आप बेहतर तैयारी कर सकते हैं। जानकारी प्राप्त करने का एक उत्तम स्रोत स्वयं आपके प्रोफेसर हैं। सीधे उन्हीं से बातचीत करने पर वे आपको यूनिवर्सिटी चुनने में मदद कर सकते हैं और प्रवेश लेने के बाद भी आप उनसे संपर्क करके मार्गदर्शन ले सकते हैं।

अमेरिका में पढ़ने के लिए आने पर यह भी ध्यान रखें कि यहां पुस्तकें और संदर्भ सामग्री बहुत महंगी है- विशेष रूप से जब उसे यूनिवर्सिटी बुक स्टोर से खरीदा जाए। अमेजन डॉट कॉम से पुस्तकें खरीदना ज्यादा अच्छा है। पुरानी पुस्तकें खरीदने के लिए यूनिवर्सिटी के सूचना पट्ट पर इस तरह की सूचना दी जा सकती है। सूचना पट्ट की मदद से पुराने छात्रों से स्टोर की तुलना में सस्ती दरों पर बर्तन या इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं भी खरीदी जा सकती हैं।

की जो अब अपने खर्चे पर दुनिया भर में शैक्षणिक यात्राएं करने में छात्रों की सहायता करता है। अमेरिका में शिक्षा चयन का मसला है। देविता कहती हैं कि उनके सामने किसी भी अमेरिकी छात्र को चुनाव के तमाम अवसर उपलब्ध थे- इतने कि तनाव हो जाए। पूर्व के संस्थान में जाएं या पश्चिम के, कस्बे में या बड़े शहर के संस्थान में, प्रतिष्ठा को चुनें या व्यावहारिकता को, व्यवसाय शिक्षण पर केंद्रित लेकिन आंशिक छात्रवृति देनेवाले संस्थान चुनें या दूसरे क्षेत्रों में अध्ययन की बढ़िया सुविधा और पूरी छात्रवृति देने वाले संस्थान? ''मैं तो यही कहूंगी कि अपनी आंखें और कान खुले रखें, सहपाठियों से पूछें, लेकिन फैसला खुद ही लें। अगर अपने मुताबिक फैसला करेंगे तो कॉलेज को याद करके हमेशा आपके चेहरे पर मुस्कराहट आएगी।'' □

लेखिका: इंडियन एक्सप्रेस, *मुंबई की भूतपूर्व रिपोर्टर मोनिका मर्सर पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना काम जारी रखने के लिए हाल ही में अमेरिका लौट गई हैं।*

विविधता की ताकत
छोटे कॉलेज बड़े गुण

रिचर्ड एकमैन

चार वर्षीय पाठ्यक्रम चलाने वाले निजी कॉलेज अंडरग्रेजुएट छात्रों को तरह-तरह के शैक्षणिक अनुभव उपलब्ध करवाते हैं। निजी या स्वतंत्र कॉलेजों और सार्वजनिक क्षेत्र के कॉलेजों की विविधताओं पर एक नजर।

अमेरिकी उच्च शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण गुण विविधता है। अमेरिकी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों या पढ़ाने के तरीकों पर केंद्र सरकार का नियंत्रण नहीं है। राज्य सरकारों का दखल भी नाममात्र का ही है। लेकिन उच्च शिक्षा के 'स्वतंत्र' या 'निजी' क्षेत्र में तो शैक्षणिक विचारों, कार्यक्रमों और परंपराओं की जबर्दस्त विविधता दिखती है। इस क्षेत्र में करीब 600 छोटे कॉलेज और विश्वविद्यालय शामिल हैं जिनमें अमेरिका के सबसे बड़े प्रतिष्ठित संस्थान भी हैं।

विविधता की इन बानगियों पर गौर करें: पेंसिल्वेनिया का अर्सिनस कॉलेज पहले वर्ष में छात्रों को एक-दूसरे से संबद्ध कई विषयों की पढ़ाई करने का विकल्प उपलब्ध करवाता है जिससे छात्र मानविकी और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में व्यापक पाठ्यक्रम से रूबरू होते हैं, नॉर्थ कैरोलाइना के वारेन विल्सन संस्थान के संचालन से जुड़े शारीरिक मेहनत के काम में कॉलेज के सभी छात्रों की भागीदारी जरूरी है और इसे कॉलेज के शैक्षणिक दर्शन का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है, विस्कांसिन का नार्थलैंड कॉलेज पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहता है, पश्चिमी वर्जिनिया के एल्डरसन-ब्रोड्डस कॉलेज के ज्यादातर छात्र पश्चिमी वर्जिनिया के पहाड़ी क्षेत्रों के बहुत छोटे कस्बों से चुने जाते हैं और उनमें से बहुत-से विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्रों में कॅरिअर बनाते हैं। क्वेकर मत के अनुयायियों द्वारा स्थापित इंडियाना का अर्लहम कॉलेज आज भी परिसर समुदाय के सभी सदस्यों की सहमति लेना अपने फैसले की प्रक्रिया में जरूरी मानता है, पेंसिल्वेनिया के महिलाओं के सेडार क्रेस्ट कॉलेज ने ढेरों महिला विज्ञान ग्रेजुएट तैयार करके इस अवधारणा को तोड़ा है कि महिलाएं विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं कर सकतीं।

तमाम भिन्नताओं के बावजूद इन करीब 600 स्वतंत्र कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में कई समानताएं हैं :

- वे बहुत छोटे होते हैं। उनकी छात्र संख्या शायद ही कभी 3,000 से ज्यादा होती हो।
- वे मुख्यत: या पूर्णत: अंडरग्रेजुएट डिग्री की पढ़ाई कराते हैं। ग्रेजुएट प्रोग्राम बहुत कम होते हैं।
- अध्यापकों में सभी अध्यापन कार्य को समर्पित

लैसा पूल © ए.पी. डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

बोस्टन में बर्कली कॉलेज ऑफ म्यूजिक के ग्रेजुएट अपने वरिष्ठ साथियों का वीडियो देखते हुए।

होते हैं। हांलाकि ज्यादातर अध्यापक शोध कार्य भी करते हैं लेकिन वे अध्यापन को ज्यादा महत्व देते हैं और छात्रों के साथ कक्षा के अंदर और कक्षा के बाहर बहुत समय बिताते हैं।

- पढ़ाने के तौरतरीकों में आपसी आदान-प्रदान बहुत होता है।
- ये संस्थान जानते हैं कि शिक्षा की ज्यादातर प्रक्रिया कक्षा के दायरे से बाहर होती है, इसलिए इनमें छात्रों में आपस में और छात्रों एवं शिक्षकों के बीच संपर्क की गुंजाइश बहुत होती है। शिक्षा से जुड़ी पाठ्येतर गतिविधियों का यह अहम हिस्सा होता है।
- ये संस्थान अपने अंतर्निहित मूल्यों को लेकर बहुत स्पष्ट होते हैं। कभी-कभी ये मूल्य कॉलेजों की स्थापना करने वाले धार्मिक पंथों की मान्यताएं (या फिर उनकी झलक यदि अब उस पंथ की उतनी सक्रिय भागीदारी नहीं है।) होती हैं। कभी-कभी इन मान्यताओं में एक विशिष्ट शैक्षणिक दर्शन झलकता है। इसके प्रसिद्ध उदाहरण हैं मैरीलैंड और मेक्सिको में दो परिसरों में चलनेवाला ग्रेट बुक्स कॉलेजों की श्रेणी में आने वाला सेंट जॉन्स कॉलेज और केंटकी का वारेन विल्सन कॉलेज या बेरिया कॉलेज जैसे श्रम आधारित कॉलेज जहां छात्रों को पढ़ाई के अलावा कॉलेजों के संचालन से जुड़े काम भी आवश्यक रूप से करने होते हैं।
- ये संस्थान जिम्मेदार नागरिक तैयार करने के लिए उदार कला विषयों के अध्ययन को जरूरी मानते हैं। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस किस्म की व्यावसायिक शिक्षा हासिल कर रहे हैं।

इन संस्थानों का उच्च शिक्षा का प्रारूप बहुत ही सफल सिद्ध हुआ है। डिग्री पूरी करने से संबंधित आंकड़े बताते हैं कि राज्यों द्वारा संचालित बड़े विश्वविद्यालयों के मुकाबले निजी कॉलेजों का प्रदर्शन बेहतर रहता है। और यह बात बढ़िया अंक लाने वाले छात्रों पर ही नहीं, सैकेंडेरी स्कूल में कम अंकों या कम सैट स्कोर के साथ कॉलेज में प्रवेश लेने वाले छात्रों पर भी लागू होती है (http://www.college-board.com)। डिग्री हासिल करने की उच्च दर उन सामाजिक-आर्थिक वर्गों से आए छात्रों में भी है जो परंपरागत रूप से कॉलेज न जाने वाले माने जाते हैं जैसे अपने परिवारों में कॉलेज जाने वाले पहली पीढ़ी के सदस्य, पूर्णकालिक नौकरियां करने वाले छात्र या अल्पसंख्यक वर्गों के छात्र। छोटे निजी संस्थानों के तुलनात्मक रूप से प्रभावी होने का कारण शायद यहां छात्रों को लगातार गतिविधियों में व्यस्त रखा जाना भी है। नेशनल सर्वे ऑफ स्टूडेंट एंगेजमेंट (जिसमें सैकड़ों कॉलेज और विश्वविद्यालय भाग लेते हैं) के संस्थापक जॉर्ज के अनुसार किसी प्रोफेसर से अच्छे संबंध, पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी, समुदाय आधारित इंटर्नशिप पर कार्य, उन कक्षाओं में अपना नाम लिखाना जहां सक्रिय पढ़ाई छाई रहती है और ऐसी कक्षाओं में उपस्थिति जहां अक्सर मौखिक और लिखित रिपोर्टें प्रस्तुत करनी होती हैं, कॉलेज में सफलता से गहरे जुड़े तथ्य हैं और ऐसे गुण अक्सर छोटे संस्थानों में ही मिल पाते हैं। छोटे स्वतंत्र संस्थान अमेरिका भर में मौजूद हैं- बड़े शहरों में, छोटे कस्बों में और देहातों में। ये संस्थान विविध प्रतिभाओं और दृष्टिकोणों से संपन्न विभिन्न पृष्ठभूमियों वाले छात्रों का स्वागत करते हैं। दूसरे देशों में पले-बढ़े छात्रों को हाथोंहाथ लिया जाता है हालांकि पढ़ाई अंग्रेजी में होती है।

इन सभी संस्थानों के बारे में अतिरिक्त जानकारी इनकी वेबसाइटों पर उपलब्ध है। अपनी वेबसाइट पर (http://www.cic.org) मौजूद लिंक के माध्यम से द कॉउंसिल ऑफ इंडिपेंडेंट कॉलेजेज इनमें से ज्यादातर संस्थानों से जुड़ी है। □

लेखक: *रिचर्ड एकमैन काउंसिल ऑफ इंडिपेंडेंट कॉलेजेज के प्रेसीडेंट हैं।*